LANGUAGE, LITERATURE, AND CULTURAL STUDIES

"आभी" कहानी के संदर्भ में पर्यावरणीय चेतना का अध्ययन:-

Dr. May Flower K.A
Associate Professor
Department of Hindi
St. Mary's College (Autonomous)
Thrissur.
E-mail: mayflowerallese@gmail.com

सारांश

वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट मानव जीवन के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुका है। औद्योगीकरण, शहरीकरण और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है, जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरकर सामने आई है। प्रस्तुत शोध-पत्र में एस.आर. हरनोट की प्रसिद्ध कहानी *"आभी"* के माध्यम से पर्यावरणीय संवेदनाओं, प्रकृति-मानव संबंध और संरक्षण की आवश्यकता का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: पर्यावरण संरक्षण, आभी कहानी, पारिस्थितिक चेतना, वनों की कटाई, प्रदूषण, हिंदी साहित्य ।

ISSN: 2582 - 2594

मूल आलेख:

सृष्टि के आरंभ से ही प्रकृति एवं मानव का गहरा संबन्ध रहा है । भारतीय संस्कृति में प्राचीन समय से ही प्रकृति के प्रति सम्मान और आदरभाव रहा है। आयुर्वेद, उपनिषदों तथा ऋषि-मुनियों की शिक्षाओं में पर्यावरण और प्रकृति के प्रति प्रेम की भावना व्यक्त की गई है।पुराने समय में लोग प्रकृति को अत्यधिक महत्व देते थे। वे प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त वस्तुओं के सहारे अपना जीवन व्यतीत करते थे। इसलिए वे इन संसाधनों का अत्यंत संतुलित रूप से उपयोग करते थे। प्रकृति को नुकसान पहुँचाना पाप समझा जाता था। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने निबंध 'कुटज' में लिखा है - *"यह धरती मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। इसीलिए मैं सदैव इसका सम्मान करता हूँ और मेरी धरती माता के प्रति नतमस्तक हूँ।"* [1]

आधुनिक विकास और औद्योगीकरण के कारण प्रकृति का शोषण प्रारंभ हो गया। जंगलों की कटाई, जल प्रदूषण और वायु प्रदूषण जैसी समस्याएँ बढ़ने लगीं। इसका मानव जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पृथ्वी का संतुलन भी संकट में है। बढ़ती हुई जनसंख्या और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है। समय के साथ-साथ लोगों की सोच में परिवर्तन आने लगा । लोग अपने स्वार्थ में आकर पृथ्वी को अत्यधिक नुकसान पहुँचाने लगे हैं।इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। प्राकृतिक संसाधनों के निर्दय शोषण के कारण संपूर्ण मानव जाति का भविष्य संकट में पड़ गया है। ।प्रकृति का संकट आज मानव जीवन के लिए एक गंभीर चेतावनी बन चुका है। जिसके समाधान के लिए सभी क्षेत्रों में प्रयास हो रहे हैं। साहित्यकार भी इस विषय के प्रति जागरूक हैं और अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को सचेत कर रहे हैं।

हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय चेतन।

साहित्य हमेशा मानव और प्रकृति के गहरे संबंध को दर्शाता रहा है। हिंदी साहित्य के इतिहास में पारिस्थितिक संवेदना एक महत्वपूर्ण और सतत विषय रहा है। साहित्य की विभिन्न विधाओं–जैसे उपन्यास, कविता, कहानी और नाटक–में प्रकृति के साथ गहरा संबंध दर्शाया गया है। तुलसीदास, कबीर, सूरदास, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा और जयशंकर प्रसाद जैसे रचनाकारों की कृतियों में प्रकृति के प्रति

संवेदनशीलता और जुड़ाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।इसके साथ ही, साहित्य में प्रदूषण, वन-संरक्षण, जल-संरक्षण, जीव-जंतुओं की सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाया गया है।हिंदी कहानीकार अपने समय की समस्याओं और पर्यावरणीय चिंताओं को गहराई से प्रस्तुत कर रहे हैं।

"आभी" कहानी का परिचय

एस.आर. हरनोट की कहानी *"आभी"* पर्यावरणीय विषय पर आधारित एक महत्वपूर्ण रचना है। इस कहानी में 'आभी' नामक एक पक्षी के माध्यम से प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया गया है।आभी एक झील की रक्षा करती है और उसे स्वच्छ बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास करती है। वह झील में गिरने वाले तिनकों और कचरे को हटाकर पर्यावरण संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है।यह पक्षी केवल एक जीव नहीं, बल्कि प्रकृति की संरक्षक शक्ति का प्रतीक है।

पर्यावरण के मुद्दे पर आधारित यह कहानी पर्यावरण और वन माफिया पर केंद्रित है। लेखक के शब्दों में–"असल में आभी जंगल की रखवाली करती है।"[2] वह हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में स्थित एक छोटी-सी झील में रहती है। उसके आसपास देवदार और बान के पेड़ खड़े हैं। झील का जल अत्यंत स्वच्छ और निर्मल है। झील में किसी भी चीज़ के गिरने पर वह तुरंत उसे अपनी चोंच से उठाकर बाहर फेंक देती है। यहाँ आने वाले विदेशी तथा अन्य पर्यटक इस दृश्य को देखकर आकर्षित हो जाते हैं।सर्दियों में पूरी झील बर्फ से ढक जाती है। तब स्थिति ओर भी कठिन हो जाती है।जब झील जम जाती है, तो जंगल के जानवर उसके ऊपर घूमते रहते हैं।

बर्फ के तूफ़ान में जब झील पूरी तरह गायब हो जाती है तब आभी बहुत परेशान हो जाती है। चारों और बर्फ देखकर वह समझ नहीं पाती कि झील कहाँ चली गयी। इस समय पूरी प्रकृति मानो संकट में पड़ जाती है। यह दिन उनके लिए कठिन होते हैं। उनके जीवन की गति कुछ ही दिनों के लिए धीमी हो जाती है। आभी अकेले इस संकट के समय पेड़ों की झाड़ियों में बैठकर अपनी चिंता करती है, लेकिन उसकी आवाज़ कोई नहीं सुनता। झील के नज़दीक जाने का भी डर लगता है, क्योंकि वह भी संकट के प्रभाव में विचलित हो जाती है।इस परिस्थिति में उन्हें जंगल की प्राकृतिक सुंदरता नष्ट होने लगती है। मौसम बदलने लगती हैं, पत्तियाँ नहीं बचतीं, पक्षियों में कोई चहल-पहल नहीं रहती और पूरी प्रकृति मौन एवं भयभीत बन जाती है।आभी

 ISSN: 2582 - 2594

अपनी झील से बहुत प्यार करती है। वह नहीं चाहती कि कोई भी उसकी झील को गंदा करे। वह पूरे दिन मेहनत करके अपनी झील को स्वच्छ बनाए रखती है। झील और जंगल साफ-सुथरे रहें, इसलिए वह पर्यटकों से भी लड़ती है और उन्हें समझाने की कोशिश करती है। लेखक के शब्दों में- "आभी नहीं चाहती उसकी झील को कोई गंदा करे। उसमें कोई ऐसी-वैसी चीज़ फेंके जो पानी को गंदला, खराब कर दे। वह बरस के इन छः महीनों में सूर्य से सूर्य तक व्यस्त रहती है। वहाँ आए पर्यटकों से लड़ती है। हवा से झगड़ती है। जंगलों के पेड़ों से लोहा लेती है। झील के पानी को पानी की तरह साफ़ रहने देना चाहती है। जैसे ही उसमें कोई तिनका जाए वह झट से अपनी चोंच से उठा कर किनारे फेंक देती है। लोग तरह-तरह की चीजें झील में फेंकने लगे हैं। वे नहीं जानते नदियों, झीलों के पानी का मोल। उन्हें नहीं पता हवाओं की ताज़गी। उन्होंने नहीं देखी हैं देवदारुओं की तपस्याएँ। वे नहीं महसूस कर पाते बुरांश के लाल फूलों की सुगन्ध। उन्हें नहीं पता कि वे अपने साथ मैदानों से लाए इस कचरे को फेंक कर कितना अनर्थ कर रहे हैं।"[3]

कहानी में पर्यावरणीय समस्याएँ:-

प्लास्टिक प्रदूषण

आजकल प्लास्टिक का कचरा एक बहुत बड़ी समस्या बन गया है। यह कचरा जंगलों या प्राकृतिक वातावरण से नहीं, बल्कि मनुष्यों की गतिविधियों से उत्पन्न होता है। लोग जब पिकनिक मनाने या घूमने के लिए प्राकृतिक स्थानों पर जाते हैं, तो वे प्लास्टिक के लिफाफे, चिप्स के पैकेट और खाली बोतलें वहीं फेंक देते हैं, जिससे झीलों और आसपास के क्षेत्रों में गंदगी फैल जाती है। कई लोग पेड़ों और पौधों के महत्व को समझे बिना उनकी पत्तियाँ तोड़ते हैं, जिससे प्रकृति को क्षति पहुँचती है। कहानी में पर्यटक झील के आसपास प्लास्टिक कचरा फेंकते हैं, जिससे पर्यावरण दूषित होता है। यह आधुनिक समाज की लापरवाही को दर्शाता है। लेखक लिखते हैं- "आभी अब झील में गिरते तिनकों और पत्तों से ज़्यादा इंसानों से डरने लगी है। उनके व्यवहार को लेकर परेशान होती है। दिन भर कितने लोग यहाँ घूमने आते हैं। कोई पेड़ों की ओट में बैठे खाते-पीते हैं और वहीं प्लास्टिक के लिफ़ाफ़े, चिप्स और पानी की खाली बोतलें फेंक कर चल देते हैं। कोई मन्दिर से दूर नीचे झाड़ियों में गंदी-गंदी हरकतें करते हैं और कई तरह के कचरे वहाँ डाल के चल देते

हैं। वे देवदारुओं की वरिष्ठता से नहीं डरते। उन्हें बान के पेड़ों की राष्ट्रीयता से कोई लेना-देना नहीं। उन्हें बूढ़ी नागिन माँ से भी शर्म महसूस नहीं होती। आभी सबकुछ देखती रहती है। उसके लिए इन बातों का समाधान नामुमकिन है। यह नई दुनियादारी उसे हैरान-परेशान किए रखती है। उसके एकान्त में यह बाहरी दखल बरदाश्त से बाहर है। पर वह कर भी क्या सकती है? वह तो बस अपना काम जानती है।"[4] इस प्रकार मानव की लापरवाही सुंदर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रही है। लेखक ने अपनी रचना के माध्यम से प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और संरक्षण की आवश्यकता का संदेश प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

वनों की कटाई:-

वन माफियाओं द्वारा पेड़ों की कटाई का चित्रण कहानी में अत्यंत मार्मिक रूप से किया गया है। इससे न केवल वन नष्ट होते हैं, बल्कि वन्य जीवों का जीवन भी संकट में पड़ जाता है।कहानी में प्रकृति के विनाश और मानव की लालची प्रवृत्ति का भी वर्णन है। लेखक का कहना है - "आभी देखती है, घने अँधेरों में यह माफ़िया राज। पल भर में जंगल कुल्हाड़ों और भयंकर आरों की आवाज़ों से सहम जाता है। तभी कई देवदारुओं की एक साथ मौत हो जाती है। बान टुकड़े-टुकड़े कट कर तड़फता जाता है। मौत की इन भयंकर चीखों से दूर-पार कभी गीदड़ हूहुआते हैं। कभी बर्फानी चीते भयंकर गर्जना करते हुए ऐसे लगते हैं जैसे कैलाश पर्वत पर विराजमान भगवान शिव से गुहार लगा रहे हों कि हे शिव ! कहाँ है तुम्हारा त्रिशूल, अब क्यों नहीं आता तुम्हें क्रोध! क्यों नहीं करते तांडव और संहार इन दुष्ट वन-माफ़ियों का।"[5] जो जंगल और उसके प्राणियों को खतरे में डाल रही है। यह कहानी जंगल की परेशानियों को दिखाती है। कुछ अजनबी लोग कुल्हाड़ी लेकर पेड़ों को काट रहे हैं, जिससे जंगल नष्ट हो रहा है। यह देखकर आभी दुखी होती है ।बूढ़ी नागिन माँ से मदद माँगती है। लेकिन वह कुछ नहीं कर पाती।जंगल में गहरा अँधेरा है और आभी को डरावनी हँसी सुनाई देती है, जो माफ़ियाओं की बुरी सोच को दिखाती है। आभी उससे बचने के लिए भागती है, लेकिन वह डर उसका पीछा नहीं छोड़ता।

वन्य जीवों पर संकट:-

कहानी में घायल मादा चीते और उसके बच्चों का वर्णन मानव की क्रूरता को उजागर करता है। यह जैव-विविधता के विनाश का प्रतीक है।आभी एक मादा चीते

 ISSN: 2582 - 2594

को देखती है जो घायल है और उसके नन्हें बच्चे उसके दूध पी रहे हैं। आभी को पता है कि मादा चीता की मौत हो जाएगी और उसके बच्चे अनाथ हो जाएंगे। आभी इस दृश्य को देखकर असहाय और निराश है। जहाँ जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।कई लोग कुल्हाड़े और बंदूकें लेकर एक घायल मादा चीते की तलाश में हैं। घने अँधेरे के कारण वे उस स्थान तक नहीं पहुँच पाते जहाँ मादा पड़ी है, लेकिन आभी जानती है कि अगर वे उसे देख लेंगे तो उसे घसीटकर ले जाएँगे। वह भीतर से बेहद डरी और व्याकुल है–चीखना और उड़ना चाहती है, पर मानो उसकी चोंच और पंख जकड़ लिए गए हों। फिर भी वह हिम्मत जुटाती है और अपनी मौन पुकार के साथ अन्य आभियों को बुलाती है। सभी मिलकर तिनके लाकर मादा को ढक देती हैं ताकि वह शिकारी लोगों की नज़र से बच सके, लेकिन उसके बच्चों को बचाने की चिंता उसे लगातार परेशान करती रहती है।आभी अपनी तेज़ आँखों से देखती है कि कुछ लोग आसपास घूमकर वापस चले जाते हैं, क्योंकि उन्हें मादा दिखाई नहीं देती।तभी एक डरावना और अस्त-व्यस्त आदमी लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ता है।उसका रूप और चाल उसकी क्रूरता दिखाते हैं।जब वह सूखे पत्तों पर चलता है, तो उनकी आवाज़ कराह जैसी लगती है।अचानक वह फिसलकर गिर जाता है।उसका कुल्हाड़ा और टॉर्च दूर जा गिरते हैं।वह अँधेरे में असहाय हो जाता है।वह कई बार गिरता और संभलता है।आखिर वह झील के किनारे पहुँच जाता है।फिर वह मुश्किल से उठता है।वह एक पेड़ के सहारे खड़ा हो जाता है।वह बहुत थका हुआ है।उसके मुँह से बदबू आ रही है, जिससे वातावरण और डरावना हो जाता है।आभी और अन्य पक्षी यह सब देखकर डर और असहायता महसूस करते हैं।

निष्कर्ष

आभी केवल एक पक्षी नहीं है, बल्कि वह पर्यावरण संरक्षण की चेतना का प्रतीक है।वह स्वच्छता और संतुलन की प्रतिनिधि है। प्रकृति की रक्षा के लिए संघर्ष का प्रतीक है। सामूहिक प्रयास की प्रेरणा देती है। आभी का संघर्ष यह दर्शाता है कि छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े परिवर्तन ला सकते हैं। "आभी" कहानी वर्तमान समय की पर्यावरणीय चुनौतियों पर एक सशक्त और संवेदनशील टिप्पणी प्रस्तुत करती है। यह केवल एक पक्षी की संघर्ष गाथा नहीं, बल्कि पूरे जीव-जगत के अस्तित्व की लड़ाई का प्रतीक है। आभी के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करता है कि प्रकृति

और मनुष्य के बीच का संबंध परस्पर निर्भरता पर आधारित है, न कि शोषण पर। जब मनुष्य अपने स्वार्थ में अंधा होकर जंगलों का विनाश करता है, जल स्रोतों को प्रदूषित करता है और जीव-जंतुओं के अधिकारों की अनदेखी करता है, तब वह स्वयं अपने भविष्य को संकट में डालता है। कहानी यह भी दर्शाती है कि पर्यावरण संरक्षण सामूहिक जिम्मेदारी है। आभी और अन्य पक्षियों की एकजुटता इस बात का प्रतीक है कि यदि सभी मिलकर प्रयास करें, तो बड़े से बड़े संकट का सामना किया जा सकता है। इसके साथ ही, "आभी" मानव गतिविधियों के दुष्परिणामों–जैसे प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन–के प्रति चेतावनी देती है। यह हमें सोचने पर मजबूर करती है कि विकास के नाम पर किया गया अंधाधुंध दोहन अंततः विनाश की ओर ले जाता है। इसलिए, संतुलित विकास और सतत जीवनशैली को अपनाना समय की मांग है।

संदर्भ:

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. कुटज. राजकमल प्रकाशन, अंक-9 पृष्ठ 32.
2. एस.आर. हरनोट *"आभी"* (डॉ. सिन्दु एस एल (मुख्य संपादक) संचार और रचना भाग दो, राजपाल प्रकाशन दिल्ली 2025) पृष्ठ 46.
3. एस.आर. हरनोट *"आभी"* पृष्ठ 49.
4. एस.आर. हरनोट *"आभी"* पृष्ठ 50.
5. एस.आर. हरनोट *"आभी"* पृष्ठ 51.

सहायक ग्रन्थ

6. *E-Book-Online- पर्यावरण विमर्श, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार, नई दिल्ली 2024.*

 ISSN: 2582 - 2594